ॐ

~~~~~~~~~~

विद्या भवन,बालिका विद्यापीठ,लखीसराय ।

कक्षा-अष्टम ***विषय- हिन्दी***

दिनांक-17-01-2021 ***कैकेयी का अनुताप***

卐 सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया 卐

मेरे प्यारे बच्चों, शुभ प्रभात!

आपका हर दिन खुशियों से भरा हो!

एन सी इ आर टी पर आधारित

कैकेयी का अनुताप

--मैथिलीशरण गुप्त

अब कहें सभी यह हाय! विरुद्ध विधाता,

'हे पुत्र-पुत्र ही, रहे कुमाता माता।'

बस मैंने इसका बाह्य-मात्र ही देखा,

दृढ़ हृदय न देखा, मृदुल गात ही देखा।
~~~~~~~~~~

परमार्थ न देखा, पूर्ण स्वार्थ ही साधा,

इस कारण ही तो हाय आज यह बाधा!

युग-युग तक चलती रहे कठोर कहानी ,

रघुकुल में भी थी एक अभागिन रानी।

निज जन्म-जन्म में सुने जीव यह मेरा,

धिक्कार! उसे था महास्वार्थ ने घेरा।"

“सौ बार धन्य वह एक लाल की माई,

जिस जननी ने है जना भरत सा भाई।"

पागल-सी प्रभु के साथ सभा चिल्लाई

सौ बार धन्य वह एक लाल की माई।"

छात्र कार्य- प्रस्तुत दोहे को कंठस्थ याद करें।

धन्यवाद ।

कुमारी पिंकी ‘कुसुम’